इकाई 3 प्रमुख गद्यकार भाग-2 अम्बिकादत्त व्यास, विश्वेश्वर पाण्डेय, हृषीकेश भट्टाचार्य और अन्य

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 पण्डित अम्बिकादत्त व्यास

- 3.2.1 जीवन-वृत्त
- 3.2.2 कर्तृत्व
- 3.2.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

3.3 आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय

- 3.3.1 जीवन-वृत्त
- 3.3.2 कर्तृत्व
- 3.3.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

3.4 पण्डित हृषीकेश भट्टाचार्य

- 3.4.1 जीवन-वृत्त
- 3.4.2 कर्तृत्व
- 3.4.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

3.5 पण्डिता क्षमाराव

- 3.5.1 जीवन-वृत्त
- 3.5.2 कर्तृत्व
- 3.5.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

3.6 डॉ. रामशरण त्रिपाठी

- 3.6.1 जीवन-वृत्त
- 3.6.2 कर्तृत्व
- 3.6.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

3.7 अन्य गद्यकार

- 3.7.1 धनपाल
- 3.7.2 वादीभसिंह

3.8 सारांश

3.9 शब्दावली

3.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.11 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- पण्डित अम्बिकादत्त व्यास के जीवन के विषय में बता सकेंगे।

- अम्बिकादत्त व्यास की रचनाओं के बारे में बता सकेंगे ।
- हृषीकेश भट्टाचार्य का परिचय बताते हुए उनकी रचनाओं की विशेषताओं से परिचित होंगे।
- आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय के व्यक्तित्व को बताकर उनकी कवित्व शक्ति का वर्णन कर सकेंगे।
- पण्डिता क्षमाराव के जीवन की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे।
- संस्कृत गद्य के कवियों में रामशरण त्रिपाठी की रचनाएं भी विशेष स्थान रखती हैं, इस तथ्य को समझ सकेंगे।
- धनपाल तथा वादीभसिंह के व्यक्तित्व को बताते हुए उनकी लेखन शैली का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आप संस्कृत गद्य से सम्बन्धित कुछ प्रमुख कवियों, रचनाकारों के जीवन-वृत्त तथा उनकी रचनाओं का परिचय प्राप्त करेंगे। इसके पूर्व की इकाई में आपने बाणभट्ट, सुबन्धु, दण्डी आदि अन्य पूर्ववर्ती प्रमुख कवियों के जीवन-वृत्त का परिचय प्राप्त करते हुए उनकी रचनाओं का अध्ययन किया है। जिससे आपको अम्बिकादत्त व्यास से पूर्व प्रतिष्ठित गद्यकारों के जीवन तथा उनकी काव्य-शैली की विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त हुआ।

संस्कृत गद्य की परम्परा प्राचीन है व्यास से लेकर बाणभट्ट ,दण्डी आदि कवियों ने गद्य रचना करके भारतीय संस्कृत साहित्य में अपूर्व योगदान दिया है। उनकी रचनाओं में कथा और पद्य के माध्यम से जीवन से लेकर राष्ट्र तक की सभी उत्कृष्टताओं का वर्णन पाया जाता है। साथ ही प्राचीन कवि अपनी गद्य-शैली की विशेषताओं के कारण सम्पूर्ण साहित्य जगत् में प्रतिष्ठा के विषय रहे हैं।

इस इकाई में आप पण्डित अम्बिकादत्त व्यास से लेकर हृषीकेश भट्टाचार्य, विश्वेश्वर पाण्डेय तथा पण्डिता क्षमाराव के अतिरिक्त अन्य कुछ प्रमुख संस्कृत गद्यकवियों के जीवन-वृत्त तथा उनकी रचनाओं का अध्ययन करेंगे। जिससे आप परवर्ती गद्य की विशेषताओं से परिचित होते हुए इन प्रमुख कवियों की शैलीगत विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे।

3.2 पण्डित अम्बिकादत्त व्यास

3.2.1 जीवन-वृत्त

पण्डित अम्बिकादत्त व्यास का नाम आधुनिक संस्कृत गद्यकारों में बहुत आदरणीय है। इनके पूर्वजों का मूल स्थान जयपुर है। जयपुर की ही रावत जी का धूला नामक गाँव में व्यास जी का जन्म हुआ था। यह पाराशर गोत्री ब्राह्मण थे साथ ही यजुर्वेदीय भी थे । इनके वृद्ध पितामह श्री गोविन्दराम जी राजस्थान के मानसिंह के पुत्र दुर्जनसिंह के वंश में उत्पन्न दलेल सिंह के राज्य पण्डित थे। इन्हीं गोविन्दराम जी के प्रपौत्र पण्डित राजाराम जी कभी तीर्थयात्रा के लिए काशी आए थे। स्थानीय लोगों के स्नेह के कारण वे काशी में ही बस गए। पण्डित राजाराम जी के बड़े पुत्र का नाम पण्डित दुर्गादत्त था जो संस्कृत और हिन्दी साहित्य की विद्वत्ता से ओत-प्रोत तो थे ही बल्कि लेखक भी थे। इनका विवाह जयपुर के सिलावट में हुआ था जहाँ इनके द्वारा द्वितीय पुत्र के रूप में अम्बिकादत्त का जन्म चैत्र शुक्ल अष्टमी संवत् 1915 तदनुसार 1858 ईस्वी को हुआ। इनकी प्रतिभा बचपन से ही

विलक्षण थी। 12 वर्ष की छोटी सी अवस्था से ही वह गोष्ठियों में सम्मिलित होने जाया करते थे। अम्बिकादत्त व्यास जी की शिक्षा-दीक्षा काशी में सम्पन्न हुई। पण्डित ताराचरण जी से व्यास जी ने साहित्यदर्पण और काव्यप्रकाश का अध्ययन किया। इसी प्रकार कुंज लाल बाजपेई से न्यायशास्त्र का और राममिश्र शास्त्री से सांख्यदर्शन का अध्ययन किया । आयुर्वेद और बंग्ला आदि भाषाओं की शिक्षा इन्होंने विश्वनाथ कविराज जी से पाई थी। 1928 में जब इनका विवाह हुआ तब वह 13 वर्ष के थे। 16 वर्ष की उम्र में इनकी माता का तथा 22 वर्ष की उम्र में इनके पिता का भी देहावसान हो गया।

3.2.2 कर्तृत्व

विलक्षण प्रतिभासम्पन्न पण्डित अम्बिकादत्त व्यास जी अपने अध्ययन और मनन से कभी विरत नहीं रहे।इनकी कविता लिखने की गति को देखकर लगता है कि इनमें कविता करने की अद्‌भुत शक्ति थी। 1 घंटे में 100 श्लोकों की रचना कर देने पर इन्हें घटिकाशतक की उपाधि दी गई।

अम्बिकादत्त व्यास को शतावधान भी कहा गया है। उनका समस्त जीवन संस्कृत और सनातन धर्म के प्रचार प्रसार में समर्पित था। बिहार के मधुबनी में उन्होंने अध्यापन किया। उन्होंने धर्म-सभा-सुधानिधि, संचारिणी सभा जैसी संस्थाओं की स्थापना की। पटना में बिहार संस्कृत जीवन को पुनर्जीवित करने में इन्हीं का योगदान रहा है। साहित्य के अलावा न्याय, वेदान्त, दर्शन, व्याकरणशास्त्र के भी व्यास जी आधिकारिक विद्वान् थे। उन्होंने आर्यभाषा सूत्रधार नामक एक हिन्दी व्याकरण लिखना प्रारम्भ किया था जो दुर्भाग्यवश अपूर्ण रह गया। व्यास जी अप्रतिम प्रतिभासम्पन्न थे। वस्तुतः अम्बिकादत्त व्यास जी ने कुल 80 रचनाएं की थीं। कतिपय कारणों से सभी रचनाओं के नाम उपलब्ध नहीं होते। उनके द्वारा रचित शिवराजविजय नामक संस्कृत उपन्यास अत्यन्त प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण है। सामवतम् नाटक, गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्, बिहारी-विहार और अबोधनिवारण व्यास जी द्वारा रचित रचनाएँ हैं। पण्डित अम्बिकादत्त व्यास जी दीर्घायु नहीं रहे। 42 वर्ष की अवस्था में इनका देहावसान हो गया था। उस समय ये गवर्नमेंट संस्कृत कालेज पटना में प्रोफेसर थे।

शिवराजविजय

यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसकी रचना 1945 से 1950 के बीच में हुई थी। शिवराजविजय उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक 3 विरामों में विभक्त है। प्रत्येक विराम में चार निःश्वास हैं।

3.2.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

शिवराजविजय में व्यास जी ने पांचाली रीति का प्रयोग किया है। इस उपन्यास में उन्होंने छोटे और लम्बे पदों का प्रयोग किया है। इस उपन्यास का प्रधान रस वीर है। इसके कथानक में 2 स्वतन्त्र कथाएं हैं एक के नायक के रूप में वीर शिवाजी तथा दूसरे के नायक के रूप में रघुवीर सिंह है। प्रायः अन्य सभी प्रतिनिधि पात्र हैं। शिवाजी तथा उनके सहयोगी देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत हैं। इस उपन्यास में कवि द्वारा नाटकीय संवादों की योजना प्रस्तुत करके संस्कृत गद्यकाव्य के लिए एक नवीन दिशा प्रदान की गई है। शिवराजविजय की रचना से काव्य के परम्परागत प्रयोजनों के अतिरिक्त संस्कृत कवियों को एक नई दिशा में प्रेरणा भी प्रदान की गई है। इसी उपन्यास से बाद के कवियों को नई विधा की रचना में प्रवृत्त होने की प्रेरणा मिली है।

3.3 आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय

3.3.1 जीवन-वृत्त

आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय के पूर्वज भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण थे। मूल रूप से वह पर्वतीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम लक्ष्मीधर पाण्डेय था। लक्ष्मीधर सभी शास्त्रों में प्रवीण विद्वान् थे। इन लोगों का मूल स्थान उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जनपद के पटिया नामक ग्राम में था। विश्वेश्वर पाण्डेय के पिता लक्ष्मीधर जी काशी आ गए थे। वह सन्तान के अभाव में बहुत दुःखी थे। इस कारण उन्होंने अपना पूरा जीवन बाबा विश्वनाथ की आराधना में समर्पित कर दिया। ऐसी कथा प्रचलित है की विश्वेश्वर पाण्डेय को बाबा विश्वनाथ की कृपा से पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। अलौकिक कृपा से उत्पन्न पुत्र का नाम विश्वेश्वर रखा गया। इन्होंने सभी शास्त्रों का अध्ययन अपने पिता लक्ष्मीधर के चरणों में बैठकर काशी में ही किया। अपनी 5 वर्ष की अवस्था में ही वह बुद्धि की विचित्रता का प्रदर्शन करने लगे थे। विश्वेश्वर पाण्डेय जी की विशेषता थी की वे जिन-जिन शास्त्रों का अध्ययन करते थे उन-उन शास्त्रों में ही नए ग्रन्थों का निर्माण प्रारम्भ कर देते थे।

3.3.2 कर्तृत्व

आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय द्वारा रचित ग्रन्थ निर्णय सागर प्रेस मुम्बई और कतिपय काशी से संस्कृत ग्रन्थमाला के द्वारा प्रकाशित हुए हैं जो आज भी उपलब्ध होते हैं। यह व्याकरण, न्याय और काव्यशास्त्र के अद्वितीय विद्वान् थे। उन्होंने महर्षि पाणिनि अष्टाध्यायी की विशद् व्याख्या के रूप में वैयाकरणसिद्धान्तसुधानिधि नामक ग्रन्थ की रचना की जो पाणिनीय व्याकरण से सम्बन्धित प्रमुख ग्रन्थ माना जाता है।

इसके अलावा अलंकारकौस्तुभ, अलंकारप्रदीप, रसचन्द्रिका ,अलंकारमुक्तावली इनके द्वारा रचित काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ हैं। काव्य ग्रन्थों में – रोमावलीशतक, आर्यासप्तशती आदि के नाम आते हैं।

गद्यकाव्य से सम्बन्धित विश्वेश्वर पाण्डेय की रचना का नाम मन्दारमंजरी है। यह ग्रन्थ पूर्व और उत्तर दो भागों में विभक्त है। इसका पूर्वार्ध विश्वेश्वर जी द्वारा रचित है और उत्तरार्ध इनके किसी शिष्य की कृति है। किन्तु यह समग्र रूप में उपलब्ध नहीं है। मन्दारमंजरी के पूर्वभाग का प्रारम्भ आर्या छन्द से हुआ है। इन प्रारम्भिक श्लोकों में ताण्डव नृत्य में प्रशक्त शिव, गौरी, गणेश, लक्ष्मी एवं सरस्वती आदि देवताओं की वन्दना की गई है।मन्दारमंजरी की कथा का प्रारम्भ प्राची दिशा के वर्णन से होता है। यहाँ पर मगध प्रदेश में पुष्पपुर या पाटलिपुत्र नाम का एक नगर था। वहाँ राजा राजशेखर राज्य करता था। उसकी रानी का नाम मलयवती था। इसमें राजा राजशेखर एवं रानी मलयवती के पुत्र राजकुमार चित्रभानु और विद्याधर चन्द्रकेतु एवं चन्द्रलेखा की पुत्री मन्दारमंजरी के प्रणय और परिणय का वर्णन है। इसी राजा द्वारा उत्कृष्ट यज्ञ सम्पन्न किए जाने और इसकी रानी मलयवती के गर्भवती होने के पश्चात् पुत्र की प्राप्ति और उस पुत्र के संस्कारों आदि का वर्णन करते हुए कवि ने राजा को उदयगिरि, अमरावती, गंधमादन गिरी होते हुए कैलाश पर्वत तक पहुंचाया है।

3.3.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

विश्वेश्वर पाण्डेय कृत मन्दारमंजरी गद्यकाव्य का एक कथा-ग्रन्थ है। यद्यपि विश्वेश्वर बाण और सुबन्धु की कृतियों से बहुत प्रभावित थे फिर भी उन्होंने मन्दारमंजरी की प्रस्तावना में इस बात का स्पष्ट उल्लेख कर दिया है कि मेरी मन्दारमंजरी समस्त काव्यों से विचित्र

होगी। मन्दारमंजरी की कथा कादम्बरी की कथा के तुल्य उलझी हुई है। कथा में उपकथा का प्रवाह चलता जाता है। मूलकथा छूट जाती है और उपकथाओं का वर्णन प्रवाहित रहता है। अन्त में कथा को जोड़ दिया जाता है। श्लेष, उपमा ,उत्प्रेक्षा, रूपक ,व्यतिरेक, विरोधाभास, परिसंख्या आदि अलंकारों के प्रयोग मन्दारमंजरी में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। इतने अलंकारों का प्रयोग करने के पश्चात् भी विश्वेश्वर जी की शैली के कारण यह ग्रन्थ अलंकारों के बोझ से कहीं भी बोझिल दिखाई नहीं देता। पाण्डेय जी की शैली में लघु तथा दीर्घ दोनों प्रकार के वाक्यों का प्रयोग होता है। सभी जगहों पर समासबहुल पदावली का प्रयोग नहीं है बल्कि ऐसे प्रयोग मन्दारमंजरी में यत्र-तत्र ही पाए जाते हैं। मन्दारमंजरी के पारस्परिक संवादों में भाषा का प्रवाह बहुत ही प्रांजल है। इस प्रकार मन्दारमंजरी कवि की गद्यकाव्य में रचित एकमात्र प्रौढ़ कृति है। बाण और सुबन्धु से सर्वथा प्रभावित होते हुए भी कवि ने अपनी इस कृति में नवीनता लाने का भरपूर प्रयास किया है ।

बोध प्रश्न 1

1) नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (√) कथन का चयन कीजिए –

   i) पण्डित अम्बिकादत्त व्यास एक नाटककार थे – ( )

   ii) अम्बिकादत्त व्यास के पूर्वज कलकत्ता के निवासी थे – ( )

   iii) विश्वेश्वर पाण्डेय को 'शतावधान' कहा गया है – ( )

   iv) 'अलंकारप्रदीप' विश्वेश्वर पाण्डेय की कृति है – ( )

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :–

   i) पण्डित अम्बिकादत्त व्यास का जन्म चैत्र शुक्ल.....को हुआ था।

   ii) 1 घण्टे में 100 श्लोकों की रचना करने के कारण अम्बिकादत्त व्यास को .... कहते हैं।

   iii) मन्दारमंजरी ..... भागों में विभक्त है।

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में लिखिए –

   i) 'आर्यभाषासूत्राधार' किसकी रचना है?

   .....

   .....

   ii) 'शिवराजविजय' के रचयिता कौन हैं ?

   .....

   .....

   iii) विश्वेश्वर पाण्डेय का जन्म कहाँ हुआ ?

   .....

   .....

   iv) 'अलंकार-कौस्तुभ' किसकी रचना हैं ?

   .....

   .....

   .....

v) 'मन्दारमंजरी' के लेखक कौन हैं ?

.....

.....

.....

अभ्यास प्रश्न

i) पण्डित अम्बिकादत्त व्यास के जीवन-वृत्त पर प्रकाश डालिए।

ii) विश्वेश्वर पाण्डेय के शैलीगत वैशिष्ट्य प्रकाश डालिए।

3.4 हृषीकेश भट्टाचार्य

3.4.1 जीवन-वृत्त

पण्डित हृषीकेश भट्टाचार्य का जन्म बंगाल में हुआ था। बंगाल में ही इनकी शिक्षा-दीक्षा भी हुई थी। उच्चतर अध्ययन के लिए भट्टाचार्य जी लाहौर गए थे जहाँ उन्होंने गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज में अध्ययन किया तथा वहीं पर उन्होंने प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। लाहौर में ही संस्कृत, अंग्रेजी आदि की शिक्षा प्राप्त कर परीक्षाएं देने के कारण भट्टाचार्य जी की विचार परिधि, चिन्तन शक्ति, दृष्टिकोण आदि अत्यन्त व्यापक हो गए थे। इन्होंने 'विद्योदय' नामक संस्कृत-पत्रिका का 44 वर्ष सम्पादन किया। ये सामयिक विषयों पर विनोदपूर्ण शैली में लेख लिखते रहे। प्रो. मैक्समूलर भी इनकी लेखन शैली से प्रभावित थे, अतः इनके प्रशंसक रहे। इनके लेखों का संग्रह 'प्रबन्धमंजरी' नाम से मुद्रित हुआ है। हृषीकेश भट्टाचार्य का समय 1850 से लेकर 1913 तक माना गया है।

3.4.2 कर्तृत्व

लघुकथा और निबन्धों में हृषीकेश भट्टाचार्य का नाम अत्यन्त प्रतिष्ठित है। उनकी कृतियों में विद्योदय, संस्कृतचन्द्रिका आदि का नाम आता है। विद्योदय नामक पत्रिका के सम्पादक हृषीकेश भट्टाचार्य थे। हृषीकेश भट्टाचार्य ने उदर-दर्शनम् को ही ब्रह्म बताते हुए 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' की शैली में कुछ उदर सूत्र भी लिखे हैं। कालिदास नाम से भी इनका संस्कृत गद्य में निबन्ध है। यह निबन्ध बहुत प्रतिष्ठित है। विद्योदय पत्रिका मे लिखे निबन्धों के संकलन के रूप में पण्डित पद्मसिंह शर्मा ने भट्टाचार्य जी के निबन्धों का संकलन 'प्रबन्धमंजरी' नामक शीर्षक से प्रकाशित किया था। हृषीकेश भट्टाचार्य साहित्य मर्मज्ञ, अनुवादक और बांग्ला व्याकरण के भी प्रणेता रहे हैं ।

3.4.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

हृषीकेश भट्टाचार्य की लेखन-शैली उस कालखण्ड में अन्य कवियों और लेखकों की अपेक्षा व्यक्तिगत विचारों को उन्नत बनाकर सुन्दर ललित शैली में प्रस्तुत करते हुए निबन्धों की रचना करने में प्रतिष्ठित रही है। कालिदास जैसे निबन्ध तो उस कालखण्ड में विभिन्न पत्रिकाओं में छपते रहे होंगे फिर भी इनके द्वारा इस शीर्षक पर लिखा गया 'कालिदासः' नामक निबन्ध विद्वानों में आदर का विषय बना था । 'प्राप्तपत्रम्' नामक शीर्षक से उन्हें मिले हुए किसी पत्र का सन्दर्भ देते हुए कभी वे किसी विषय पर स्वयं लिखते थे अथवा पुणे में निवास करने वाली अनामिका देवी की ओर से मिले पत्र के रूप में महिलाओं के महत्त्व पर और जो उनकी दशा स्वार्थी भारतीयों ने बना दी थी ,उस पर अपने सटीक विचार रख देते थे। हृषीकेश भट्टाचार्य के गद्य की विशेषता यह थी की उनकी रचनाओं में बाणभट्ट की शैली

के भी दर्शन होते थे जैसे– वर्णनात्मक लम्बे वाक्य। भट्टाचार्य जी की संस्कृत शैली बिल्कुल नवीन और बाण के समान सुन्दर थी। इसीलिये ये 'अभिनव बाण' कहे जाते थे। इनकी बातें सर्वथा नवीन होती थीं और नए ढंग से कही हुई होती थीं। हृषीकेश भट्टाचार्य के गद्य की दो विशेषताएं इस श्लोक में देखने को मिलेंगी–

मुद्रयतिवदनविवरं मृतभाषावादिनां मुहेराणाम् ।
स्मरयति च भट्टबाणं भट्टाचार्यस्य सा वाणी ।।

3.5 पण्डिता क्षमाराव

3.5.1 जीवन-वृत्त

क्षमाराव का जन्म 4 जुलाई 1890 को हुआ था। इनका जन्म-स्थान पुणे बताया गया है। इनके पिता का नाम पण्डित शंकर पांडुरंग था। ये संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे। जब पण्डिता क्षमाराव 3 वर्ष की थीं तभी उनके पिता जी का देहावसान हो गया था। चाचा ने इनका पालन-पोषण किया था। वे राजकोट में बैरिस्टर थे। क्षमा की छोटी बहन का नाम तारा था। दोनों बहनें चाचा के घर रहते हुए भी अपने चचेरे भाइयों के पाठों को सुन-सुन कर याद कर लेती थीं। इन्हें पाठशाला नहीं भेजा जाता था। 12 वर्ष की आयु में ही तारा का भी देहावसान हो गया। इसी क्रम में क्षमा ने सौराष्ट्र से मैट्रिक की परीक्षा पास की। इसके बाद मुम्बई के विल्सन कॉलेज में क्षमा ने प्रवेश लिया जहाँ पर काणे साहब उनके शिक्षक रहे। अध्ययन की पूर्ति के पूर्व ही 20 वर्ष की आयु में क्षमा जी का विवाह मुम्बई के एक प्रसिद्ध डॉक्टर राव से हो गया। क्षमा जी ने अपने चिकित्सक पति के साथ यूरोप का भ्रमण किया। फ्रेंच, जर्मन तथा अंग्रेजी भाषाओं का खूब अभ्यास भी किया। कालक्रम के अनुसार 1953 में इनके पति का भी देहावसान हो गया। आजादी की लड़ाई तथा गाँधी जी के सत्याग्रह के प्रति आस्था होने के कारण क्षमा जी ने स्वतन्त्रता संग्राम पर तीन महाकाव्यों की रचना की। अयोध्या की संस्कृत कल्याण संस्था द्वारा 1938 में इन्हें पण्डिता की उपाधि से अलंकृत किया गया था। इसके पश्चात् 1942 ईस्वी में 'साहित्य चन्द्रिका' उपाधि से विभूषित हुईं।

3.5.2 कर्तृत्व

पण्डिता क्षमाराव की निम्नलिखित कृतियाँ उपलब्ध हैं –

1) **सत्याग्रहगीता**– इसमें कुल 18 अध्याय हैं। अनुष्टुप् छन्द में गीता के अनुकरण पर गाँधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन के वर्णन के साथ 659 पदों में यह पुस्तक 1932 में प्रकाशित हुई। क्षमा जी ने इस पुस्तक में भगवद्गीता की स्थितप्रज्ञ का और गाँधी जी की महत्त्वता की एक जैसी तुलना की है ।

2) **स्वराज्यविजयः** – इस पुस्तक में कुल 45 अध्याय हैं। यह ग्रन्थ 1962 में प्रकाशित हुआ। गाँधी जी की जीवन गाथा के साथ-साथ भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास का वर्णन इस पुस्तक में क्षमा जी ने किया है ।

3) **मीरालहरी** – यह खण्डकाव्य है। यह ग्रन्थ 1944 में प्रकाशित हुआ। इसमें 2 खण्ड हैं। पूर्वखण्ड में 91 श्लोक तथा उत्तरखण्ड में 44 श्लोक हैं। पूरा का पूरा खण्डकाव्य शार्दूलविक्रीडित छन्द में रचा गया है। इसमें मीरा के उदात्त चरित्र का वर्णन किया गया है।

4) **तुकारामचरितम्** – यह महाकाव्य है। इसका प्रकाशन 1950 में हुआ। यह नौ सर्ग तथा 435 श्लोकों में निबद्ध है। इस महाकाव्य में क्षमाराव ने महाराष्ट्र के भक्त शिरोमणि तुकाराम जी के चरित्र का उदात्त चित्रण किया है।

5) **श्री रामदासचरितम्** – यह भी महाकाव्य है। 1953 में इसका प्रकाशन हुआ। छत्रपति वीर शिवाजी के गुरू रामदास का चरित्र इस महाकाव्य में वर्णित किया गया है।

6) **श्री ज्ञानेश्वरचरित्र** – इसमें आठ सर्ग हैं। यह भी महाकाव्य है। 1954 में सन्त योगी ज्ञानेश्वर का चरित्र वर्णन इस महाकाव्य में कवि के द्वारा किया गया है। इसके अतिरिक्त उत्तर सत्याग्रह गीता भी पण्डिता क्षमाराव जी की रचना है।

7) **ग्रामज्योतिः** – 1955 में ग्रामज्योतिः के अन्तर्गत तीन कथाओं का संग्रह किया गया।

   क) **रेवा की कथा** – इसमें कृषक महिला के त्याग की कथा का वर्णन किया गया है जिसमें लगान न देने के कारण उसके घर में आग लगा दी जाती है ।

   ख) **कटुविपाक कथा** – इसमें किसान के सत्याग्रह किए जाने का वर्णन है जो कभी सत्याग्रही नहीं था।

   ग) **वीरभा** – इस कथा में एक ऐसी महिला की गाथा का वर्णन किया गया है जिसने प्राणों की चिन्ता न करके राष्ट्रीय ध्वज को अपमानित होने से बचाया है। उपर्युक्त सभी कथाएं श्लोकों में लिखी गई हैं। इसके अतिरिक्त कथापंचकम् है जो पाँच कथाओं के लिए प्रसिद्ध है।

कथा मुक्तावली पूर्णरूप से गद्यमय है। इसके अतिरिक्त एकांकी, नाटक ,तीन अंकों वाले चार नाटक, 35 लघुकथाएं जिनमें 23 अप्रकाशित हैं। पत्र-साहित्य, यात्रा-विवरण आदि अनेक संस्कृत गद्य की रचनाएं प्राप्त हैं। इन रचनाओं में पण्डिता क्षमाराव जी की देशभक्ति, साहित्य-प्रेम और पूर्णनिष्ठा की झलक दिखाई देती है।

3.5.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

पण्डिता क्षमाराव की भाषा-शैली में समरसता, प्रसाद और प्रांजलता होने के साथ-साथ उत्कृष्टता के दर्शन होते हैं। विषय की नवीनता और जीवन की अनुभूतियों की गहराई के कारण क्षमाराव के गद्य और पद्य दोनों में एक अद्‌भुत शैली का दर्शन होता है। इनकी सभी रचनाओं को देखने से पता चलता है कि पण्डिता क्षमाराव का दृष्टिकोण बिल्कुल विशिष्ट और आधुनिक था। यह बात उनकी सभी रचनाओं में प्रतिबिम्बित होती हैं। रस वर्णन, अलंकार वर्णन से लेकर समाज प्रयोग, प्रकृति वर्णन और समाज की समसामयिक समस्याओं से लेकर राष्ट्र के गौरव पथ का चिन्तन आपकी शैली की विशेषता रही है । आपने अपनी लेखनी से कुरीतियों का विरोध किया है । उनके प्रति विद्रोह का भाव आपके लेखन में झलकता है। इसके अतिरिक्त भक्ति भाव में तन्मयता भी आपकी शैली की विशेषता है।

बोध प्रश्न 2

1) नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (√) कथन का चयन कीजिए –

   i) हृषीकेश भट्टाचार्य की शिक्षा लाहौर में नहीं हुई थी – ( )

   ii) 'चण्डीशतक' विश्वेश्वर पाण्डेय की कृति है – ( )

   iii) हृषीकेश भट्टाचार्य 'विद्योदय' नामक पत्रिका के सम्पादक थे – ( )

   iv) संस्कृत कल्याण संस्था द्वारा क्षमाराव को 'पण्डिता' की उपाधि दी गयी – ( )

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

i) सत्याग्रहगीता में कुल ..... अध्याय हैं।

ii) स्वराज्यविजय ..... की रचना है।

iii) मीरालहरी ..... है।

iv) प्राप्तपत्रम् का सम्बन्ध ..... से है।

v) कथामुक्तावली ..... की रचना है।

अभ्यास प्रश्न

i) हृषीकेष भट्टाचार्य के शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

ii) पण्डिता क्षमाराव की रचनाओं के विषय में संक्षेप में लिखिए।

3.6 डॉ. रामशरण त्रिपाठी

3.6.1 जीवन-वृत्त

डॉ. रामशरण त्रिपाठी का जन्म बाँदा जिले के मरका नामक ग्राम में हुआ था। बाँदा उत्तर प्रदेश का एक जनपद है। रामशरण जी संस्कृत भाषा के समर्पित साधक थे। इन्होंने विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन भी किया। विद्वानों की परम्परा में इनका समय 1960 से 1977 तक निर्धारित किया है। इनके माता-पिता, भाई-बहन तथा बाल्यकाल के जीवन के विषय में बहुधा उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी पुष्ट प्रमाणों के आधार पर यह कहा जाता है कि डॉ. रामशरण त्रिपाठी ने जीवन के अन्तिम दिनों में प्रयाग में निवास किया था। विद्वानों के बीच समादर पाने वाली रामशरण त्रिपाठी जी की रचनाएँ ही इस बात का प्रमाण हैं कि उन्होंने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक संस्कृत के प्रत्येक पक्ष के शिक्षा ग्रहण की होगी।

3.6.2 कर्तृत्व

डॉ. रामशरण त्रिपाठी के पाँच ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं– रचनानुवादरत्नाकर, सरलज्योतिर्विज्ञान, वेदान्तसार (भावबोधिनी टीका), ब्रह्मसूत्रप्रमुखभाष्यपञ्चकसमालोचनम्, कौमुदीकथाकल्लोलिनी। इनमें कौमुदीकथाकल्लोलिनी चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी से 1961 में प्रकाशित हुई है। यह रचना श्री गंगानाथ झा केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ इलाहाबाद से 1989 में प्रकाशित हुई। कौमुदीकथाकल्लोलिनी में 11 कल्लोलों (अध्यायों) में कौशाम्बी के राजा उदयन के पुत्र नरवाहनदत्त की जन्म से लेकर गान्धर्व-महाभिषेक तक की कथा वर्णित है।

3.6.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

रामशरण त्रिपाठी के ग्रन्थों का अध्ययन करने से यह प्रतीत होता है कि उनमें कवित्व की प्रतिभा प्रखर थी। प्रत्यय के प्रयोग से कथानक के साथ-साथ भाषा का ठीक से पाठक को ज्ञान कराना रचनाकार की एक विशेष विशेषता है। इस प्रकार की शैली केवल रावणवध महाकाव्य की रचना के समय प्रयुक्त की गई थी। कारक और समास का एकसाथ ज्ञान कराते हुए गद्य में रचना के माध्यम से अध्येता के ज्ञान को साहित्य और व्याकरण दोनों से परिपूर्ण करने वाली शैली के प्रयोक्ता रामशरण त्रिपाठी जी रहे हैं। साहित्य के माध्यम से व्याकरण के शिक्षा देना अथवा व्याकरण का वर्णन करते हुए साहित्य की शिक्षा दे देना, दोनों प्रकार की कलायें कवि की शैली में विद्यमान हैं।

3.7 अन्य गद्यकार

3.7.1 धनपाल

संस्कृत गद्य में लेखन करने वाले धनपाल का समय 10 वीं शताब्दी माना गया है। आचार्य बलदेव उपाध्याय अपनी पुस्तक 'संस्कृत साहित्य के इतिहास' में इनका समय इसी प्रकार मानते हैं। धनपाल कश्यप गोत्र में उत्पन्न जैन थे। यह मुंजराज के सभासद थे तथा भोजराज के चाचा थे। 'प्रबन्धचिन्तामणि' में इनके जीवन के बारे में उल्लेख मिलता है। इनके पिता का नाम सर्वदेव था वह भी उज्जैन के कश्यप गोत्र के ब्राह्मण थे।यह दो भाई थे, दोनों ने जैन धर्म की दीक्षा ग्रहण की थी। तत्कालीन राजाओं के द्वारा इन्हें विशेष सम्मान प्राप्त था। राजा ने इनकी काव्य-प्रतिभा से प्रसन्न होकर इनको 'सरस्वती' की उपाधि दी थी।

भोजराज के दरबार में धनपाल की बहुत प्रतिष्ठा थी। उन्हीं की प्रेरणा से इन्होंने 'तिलकमंजरी' नामक गद्यकाव्य की रचना की। तिलकमंजरी धनपाल की रचना का एकमात्र आधार है। यद्यपि इनकी अन्य दो रचनाएं भी हैं–ऋशभपंचाशिका तथा पाइउ लच्छीव, जिसे प्राकृत लक्ष्मी कहते हैं। इन दोनों रचनाओं ने धनपाल को एक सफल कवि के रूप में उतना प्रतिष्ठित नहीं किया जितना वे साहित्य जगत् में तिलकमंजरी की रचना के कारण हुए। संस्कृत गद्य में बाणभट्ट की प्रतिभा की अलौकिकता के सामने अन्य कोई कवि आज तक सफल नहीं हो सका। बाणभट्ट की शैली ने गद्यकाव्य की एक ऐसी दिशा को प्रदर्शित किया, एक ऐसे उन्मेष का निदर्शन किया, जिसके कारण अन्य गद्य-कवि उस मार्ग पर चलने में अपना गौरव समझने लगे। धनपाल की शैली शोभन शैली है। इन्होंने बाणभट्ट के मार्ग का अनुसरण किया है। अपेक्षाकृत सुबोध शैली में तिलकमंजरी की रचना की है। धनपाल जी की शैली में दुरूहता नहीं है। भाषा प्रांजल है कठिन शब्दों के प्रति अभिरुचि नहीं है अतः शैली सुबोध है। बाणभट्ट के समान ही धनपाल भी उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों के प्रयोग में निपुण दिखाई देते हैं। इनकी भाषा और शैली के विन्यास में रस प्रयोग के दर्शन हो जाते हैं। धनपाल की भाषा व्यावहारिक विषयों के यथार्थ चित्रण की क्षमता से भरपूर है।

3.7.2 वादीभसिंह

वादीभसिंह की जन्म-भूमि के उल्लेख के अभाव में इनके मूलनाम ओड्यदेव के आधार पर श्री पं.के. भुजबली शास्त्री ने इन्हें तमिल प्रदेश निवासी कहा है और वी. शेषगिरि राव ने अनुमान किया है कि वादीभसिंह मूलतः कलिंग (तेलगु) के गन्जाम के निवासी हो सकते हैं। भुजबली शास्त्री का कथन है कि तमिल निवासी होते हुए भी वादीभसिंह की साहित्यिक साधना की भुमि मैसूर प्रान्त ही थी क्योंकि मैसूर प्रान्त के अन्तर्गत कई स्थानों में उपलब्ध शिलालेख इस उपर्युक्त तथ्य के साक्षीभूत हैं।

बाण की दोनों कृतियों 'हर्षचरित' और 'कादम्बरी' से वादीभसिंहकृत 'गद्यचिन्तामणि' प्रभावित है क्योंकि प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रदत्त उपदेश 'कादम्बरी' के शुकनासोपदेश की छाया ही है। इसके अतिरिक्त 'गद्यचिन्तामणि' के बहुत से वर्णन-स्थल 'हर्षचरित' के अनुरूप हैं। अतः वादीभसिंह निर्विवाद रूप से बाण के परवर्ती हैं।

''कर्मकोद्रवरसेन हि मत्तः किं किमेत्यशुभधाम न जीवः'' के आधार पर उल्लेख किया है कि वादीभसिंह और वादीराज दोनों गुरूभाई थे और सोमदेव उनके गुरू थे। सोमदेव ने 'यशस्तिलकचम्पू' की रचना शकाब्द 881 तदनुसार 959 ई. में की थी तथा वादीराज ने 'पार्श्वचरित' का निर्माण शकाब्द 947 तदनुसार 1025 ई. में किया था। अतः वादीभसिंह का

समय ईसा की एकादश शताब्दी होना चाहिए। आचार्य पण्डित बलदेव उपाध्याय जी ने भी उपर्युक्त तिथि ही मानी है। वादीभसिंह दार्शनिक तथा कवि दोनों थे। 'गद्यचिन्तामणि' इनकी प्रमुख गद्यप्रबन्धात्मक रचना है। कवि ने उसी कथा को 'क्षत्रचूड़ामणि' नामक पद्यकाव्य के रूप में प्रणीत किया। दोनों ग्रन्थ एकादश लम्भों में लिपिबद्ध हैं। क्षत्रचूड़ामणि का उल्लेखनीय वैशिष्ट्य है कि इसमें कुमार जीवन्धर के जीवन-चरित के वर्णन के साथ-साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुषार्थचतुष्टय का वर्णन नीतिपुरस्सर किया गया है। इस दृष्टिकोण से इस ग्रन्थ का समस्त संस्कृत वाङ्मय में अद्वितीय महत्त्व है। इस ग्रन्थ का मूलरूप में प्रकाशन सर्वप्रथम टी.एस. कुप्पूस्वामी तथा पं. मोहनलाल जी ने किया है।

वादीभसिंह की दोनों रचनायें 'गद्यचिन्तामणि' और 'क्षत्रचूड़ामणि' पूर्ववर्ती कवियों कालिदास, सुबन्धु, बाण, दण्डी आदि की कृतियों से प्रभावित हैं। कवि ने क्लिष्ट अलंकृत गद्य-शैली में 'गद्यचिन्तामणि' का प्रणयन किया है। यह काव्य 'क्षत्रचूड़ामणि' के समान ही एकादश लम्भों में विभक्त है।

इस काव्य में सानुप्रासिक समासान्त पदावली एवं विरोधाभास और परिसंख्या आदि अलंकारों का चमत्कार सर्वथा दर्शनीय है। काव्य की शब्दगत सुषमा को सुरक्षित रखने के लिए कवि ने पुनरुक्ति से बचने हेतु नये-नये शब्दों का सृजन किया है ।

'गद्यचिन्तामणि' की भाषा की प्रवाहयुक्तता अभीष्ट रस की अभिव्यक्ति में सहायक सिद्ध होती है। प्रस्तुत काव्य की इन्हीं विशेषताओं का उल्लेख करते हुए इसके प्रथम सम्पादक पं0 कुप्पूस्वामी ने कहा है कि यह काव्य पदों की सुन्दरता, श्रवणीय शब्दों की रचना, सरल कथासार, चित्त को आश्चर्य में डालने वाली कल्पनाएं और हृदय में प्रसन्नता उत्पन्न करने वाले धर्मोपदेश आदि से सुशोभित है।

"अस्य काव्यपथे पदानां लालित्यं, श्राव्यः शब्द-सन्निवेशः, निरर्गला वाग्वैखरी, सुगमः कथासारागमः, चित्त-विस्मापिकाः कल्पनाश्चेतः प्रसादजनको-धर्मोपदेशो ..... विलसन्ति विशिष्टगुणाः।"

काव्यशास्त्रीय सभी नौ रसों का 'गद्यचिन्तामणि' में परिपाक सम्यक् रीति से हुआ है। इस गद्यप्रबन्ध का अंगी रस शान्त है और समस्त शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स और अद्भुत शेष अन्य रस स्थान-स्थान पर अपनी गरिमा प्रकट करते हैं। कथा के नायक की गन्धर्वदत्ता आदि आठ नई नवेली वधुएं हैं। उनके साथ पाणिग्रहणोपरान्त शृंगार रस के संयोग तथा वियोग उभय पक्ष का परिपाक हुआ है, पर कवि ने वर्णन में अश्लीलता नहीं आने दी है।

बोध प्रश्न 3

1) नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (√) कथन का चयन कीजिए –

   i) 'तिलकमंजरी' के रचयिता वादीभसिंह हैं – ( )

   ii) 'गद्यचिन्तामणि' के रचयिता धनपाल हैं – ( )

   iii) 'क्षत्रचूड़ामणि' वादीभसिंह की रचना है – ( )

   iv) वादीभसिंह का समय ईसा की एकादश शताब्दी है – ( )

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

i) कौमुदीकथाकल्लोलिनी में ..... कल्लोल हैं।

ii) धनपाल का समय ..... है।

iii) धनपाल के पिता का नाम ..... था।

iv) गद्यचिन्तमणि का अंगी रस ..... है।

अभ्यास प्रश्न

i) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए –

क) विश्वेश्वर पाण्डेय

ख) रामशरण त्रिपाठी

ग) धनपाल

3.8 सारांश

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपने जाना कि बाणभट्ट के पश्चात संस्कृत गद्य की चली आ रही विशाल परम्परा में पण्डित अम्बिकादत्त व्यास का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। अम्बिकादत्त व्यास जी ने संस्कृत गद्य लेखन की एक नई विधा में उपन्यास का लेखन करके सम्पूर्ण साहित्य जगत् में मानक स्थापित किया। उनके द्वारा रचित उपन्यास का नाम 'शिवराजविजय' है। इनकी भाषा सहज, सरल और मनोहर है। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए पण्डित हृषीकेश भट्टाचार्य ने भी विद्योदय पत्रिका का सम्पादन करने के साथ-साथ प्राप्तपत्रम् में गद्य-लेखन करके पाठक जगत् को एक नवीन लाभ पहुंचाया। इसके अतिरिक्त विद्योदय पत्रिका मे लिखे निबन्धों के संकलन के रूप में पण्डित पद्मसिंह शर्मा ने भट्टाचार्य जी के निबन्धों का संकलन 'प्रबन्धमंजरी' नामक शीर्षक से प्रकाशित किया। हृषीकेश भट्टाचार्य बांग्ला भाषा के ज्ञाता होते हुए साहित्य मर्मज्ञ अनुवादक और बांग्ला व्याकरण के प्रणेता भी रहे हैं। विश्वेश्वर पाण्डेय ने 'मन्दारमंजरी' नामक एक अद्भुत गद्य ग्रन्थ की रचना की जो संस्कृत जगत् के विद्वानों में आदर का पात्र बनी। आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय की शैली और उनकी लेखन कला से आचार्य परम्परा से लेकर पाठक परम्परा तक सभी प्रशंसक बने। संस्कृत गद्य लेखन के इसी क्रम में पण्डिता क्षमाराव का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है जिन्होंने गाँधी जी के सत्याग्रह से प्रेरित होकर सत्याग्रह गीता आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की। साथ-साथ इन्होंने लघु कथाओं का भी प्रणयन किया जिनमें कुछ प्रकाशित और कुछ अप्रकाशित रहीं। डॉ. रामशरण त्रिपाठी ने व्याकरण के माध्यम से साहित्य के शिक्षा और साहित्य के माध्यम से व्याकरण के शिक्षा देने के लिए दो ग्रन्थों की रचना की। रावणवध महाकाव्य की रचना प्रकृति इनकी रचनाओं से मेल खाती है। धनपाल ने 'तिलकमंजरी' नामक ग्रन्थ की रचना करके एक चमत्कार का अनुभव कराया है। धनपाल जी की रचना संस्कृत गद्य में प्रतिष्ठित है।

'गद्यचिन्तामणि' वादीभसिंह की रचना है जिसमें उन्होंने सुबोध शैली का प्रयोग करके बाणभट्ट से चली आ रही परम्परा का सफल संरक्षण किया है। फिर भी इनकी रचनाओं में नवीनता पाई जाती है। इस सम्पूर्ण इकाई का अध्ययन करने के बाद आप अम्बिकादत्त व्यास से लेकर वादीभसिंह तक की सम्पूर्ण गद्य परम्परा का उल्लेख कर सकेंगे।

3.9 शब्दावली

प्रतिष्ठा – संस्थापित

विलक्षण – असाधारण

परम्परागत – पूर्वागत

प्रेरणा – प्रेरित करना

प्रवीण – कुशल

आराधना – उपासना

अलौकिक – अद्‌भुत, लोक में सर्वोत्तम

उत्कृष्ट – श्रेष्ठ, प्रशंसनीय

प्रांजल – सीधा, सरल

प्रकाण्ड – योग्य, निपुण

उदात्त – उन्नत

3.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) संस्कृत साहित्य का इतिहास – आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी

2) संस्कृत साहित्य का इतिहास –वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी

3) संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ शिवमूर्ति शर्मा , दया पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद

4) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – कपिलदेव, द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार, कटरा, इलाहाबाद।

5) संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।

3.11 बोध/अभ्यास प्रश्नों उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) असत्य (ii) असत्य (iii) असत्य (iv) सत्य

2) i) अष्टमी (ii) घटिकाशतक (iii) दो

3) i) आर्यभाषासूत्रधार पण्डित अम्बिकादत्त व्यास की रचना है।

ii) शिवराजविजय के रचयिता अम्बिकादत्त व्यास हैं।

iii) विश्वेश्वर पाण्डेय का जन्म अल्मोड़ा में हुआ था।

iv) अलंकार-कौस्तुभ विश्वेश्वर पाण्डेय की रचना है।

v) मन्दारमंजरी के लेखक विश्वेश्वर पाण्डेय हैं।

बोध प्रश्न 2

1) (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

2) (i) 18 (ii) पण्डिता क्षमाराव (iii) खण्डकाव्य (iv) हृषीकेश भट्टाचार्य (v) क्षमाराव

बोध प्रश्न 3

1) (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

2) (i) 11 (ii) 10वीं शताब्दी (iii) सर्वदेव (iv) शान्त

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखे।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY